“सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों एवं कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी” परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित

तितली

DFID Department for International Development

वर्ष – 2, जुलाई-सितम्बर 2010

25 years 1983 2008 CUTS International

रंग बिरंगे पंखों से...

Save the Children

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

तितली के इस अंक में ''सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों और कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी परियोजना'' के अन्तर्गत परियोजना क्षेत्र में हो रहे सकारात्मक बदलाव एवं उपलब्धियों को प्रमुखता से प्रकाशित किया जा रहा है।

बच्चों के लिए बच्चों द्वारा गठित बाल पंचायतों की बच्चों से जुड़े मुद्दों के प्रति समझ बढ़ रही है। बच्चे अपनी बात ग्राम पंचायत में रखने लगे हैं। सावा की ढाणी के बच्चों ने श्रमदान कर रास्ता ठीक कर एक अनूठी मिसाल कायम की है। बाल पंचायतों को मार्गदर्शन प्रदान करने में सचेतक प्रशंसनीय भूमिका से निभा रहे हैं। परियोजना क्षेत्र के दो गाँवों में समुदाय ने आँगनवाड़ी स्वीकृत कराने में सफलता प्राप्त की है। इस अंक के बारे में आपके बहुमूल्य सुझाव सादर आमंत्रित हैं ...✍

आशीष त्रिपाठी, केन्द्र समन्वयक

अन्दर के पृष्ठ में

- बच्चों ने दी अर्जी
- ईद का तोहफा
- लानी है मुस्कान
- मुँ कई करूँ

समुदाय को मिली सफलता

ग्राम पंचायत एराल के चित्तौड़ी गाँव मे 100 घर हैं। गाँव में प्राथमिक विद्यालय है परन्तु 3 से 5 वर्ष के लगभग 25 से 30 बच्चों के लिये आँगनवाड़ी की सुविधा नहीं है। ये छोटे बच्चे दिन भर इधर उधर घूमते रहते हैं। कुछ बच्चे अपने बड़े भाई बहनों के साथ स्कूल जाते हैं जिससे बड़े बच्चों की पढ़ाई भी बाधित होती है। कट्स द्वारा गाँव में आयोजित समुदाय बैठक के दौरान समुदाय ने आँगनवाड़ी के लिये मांग की। कट्स की कार्यकर्ता ने ग्रामवासियों को ग्राम सभा में प्रस्ताव लिखवाने हेतु प्रेरित किया। 5 अप्रेल 2010 को एराल में आयोजित ग्राम सभा में लोगों ने चित्तौड़ी गाँव में आँगनवाड़ी खुलवाने का प्रस्ताव लिखवाया।

समुदाय की मेहनत रंग लाई व 21 अगस्त 2010 से गाँव में आँगनवाड़ी केन्द्र खुल गया। ग्रामवासी खुश हैं कि उनके बच्चे अब शाला पूर्व शिक्षा पा सकेंगे। भवन के अभाव में आँगनवाड़ी केन्द्र निजी भवन में संचालित हो रहा है। केन्द्र पर 12 बच्चे लगातार आ रहे हैं।

18 दिसम्बर 2009 को कट्स मानव विकास केन्द्र पर हितधारक कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला में जनप्रतिनिधि, ग्राम साथिन, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी, समुदाय मुखिया उपस्थित थे। कार्यशाला में नई आबादी शंभूपुरा के लोगों ने बताया कि नई आबादी रोड के दूसरी तरफ बसा हुआ है। वाहनों की आवाजाही से दुर्घटना की संभावना के कारण छोटे बच्चे रोड पार कर आँगनवाड़ी केन्द्र पर नहीं जा सकते। कार्यशाला में आये बाल विकास परियोजना अधिकारी शब्बीरूदीन को प्रार्थना पत्र देकर नई आबादी शंभूपुरा में आँगनवाड़ी केन्द्र स्वीकृत करने हेतु निवेदन किया जो कि 09 सितम्बर 2010 को स्वीकृत हो गया। आँगनवाड़ी कार्यकर्ता के लिए 6 महिलाओं ने आवेदन किया। ग्राम सभा के दौरान अनुभव एवं योग्यता के आधार पर शोभा देवी का चयन आँगनवाड़ी कार्यकर्ता के रूप में किया गया। 1 अक्टूबर, 2010 को नई आबादी के लोगों ने बैठक आयोजित कर आँगनवाड़ी केन्द्र संचालित करने के लिये स्थान का चयन किया। सर्व सम्मति से माता जी का मंदिर, जो कि गांव के बीच में स्थित है, पर आँगनवाड़ी संचालित करने का निर्णय लिया गया।

बच्चों ने किया श्रमदान, राह बनी आसान

चित्तौड़गढ़ जिले की सामरी ग्राम पंचायत का एक छोटा सा गाँव है सावा की ढाणी। बरसात के दिनों में गाँव के रास्ते में घुटनों तक पानी भर जाता है। कई दिनों तक कीचड़ बना रहता है, जिससे राहगीरों को आने जाने में बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। बाल पंचायत ने गाँव के प्रबुद्ध लोगों से रास्ता ठीक करवाने हेतु निवेदन किया जिससे स्कूल तक आसानी से पहुँचा जा सके। लेकिन बच्चों की बात पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। कीचड़ से बच्चे ज्यादा प्रभावित होते हैं इसलिए बाल पंचायत ने अपने ही स्तर पर समस्या का समाधान करने का निर्णय लिया। बाल पंचायत सदस्य स्वप्रेरित होकर अपने–अपने घरों से फावड़ा, गेंती और तगारी लेकर लाये। बाल पंचायत के सदस्यों में गोविन्द, संतोष, सूरजमल, प्रियंका, प्रवीण, विक्रम एवं गोपाल ने सचेतक पप्पू रायका के साथ मिलकर श्रमदान से रास्ता ठीक करने की शुरूआत की। विद्यालय के पीछे पड़ी मिट्टी के ढ़ेर को खोदा। मिट्टी को बोरियों में भरकर साईकिलों पर लाद कर रास्ते तक लाए। सभी खड्ढों में मिट्टी डालकर रास्ते को ठीक कर दिया। बाल पंचायत की इस छोटी सी पहल से गाँव के लोग प्रभावित हुये व बच्चों को शाबाशी दी। ग्रामवासियों ने बच्चों द्वारा किये इस पुनीत कार्य के लिए प्रशंसा की एवं श्रमदान का महत्व समझा।

बाल पंचायत की इस अनूठी मिसाल से गाँव के युवाओं ने प्रभावित होकर गांव के रास्ते की समस्या के स्थाई निराकरण के लिये ग्राम पंचायत से सम्पर्क किया।

बच्चों ने दी ग्राम सभा में अर्जी

चित्तौड़गढ़ जिले की ग्राम पंचायत नेतावल गढ़ पाछली की बाल पंचायत सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। बाल पंचायत ने विद्यालय से जुड़ी समस्याऐं चिन्हित की। विद्यालय की छत खराब होने से बरसात के दिनों में पानी टपकता है व पेयजल की उचित व्यवस्था नहीं है। बरसात के दिनों में रास्ते में पानी भर जाता है जिससे विद्यालय जाने में परेशानी होती है। इन समस्याओं के समाधान हेतु बाल पंचायत ने एक प्रार्थना पत्र तैयार कर ग्राम सभा में प्रस्तुत किया।

बच्चों ने बताया कि हम अपनी मांग रखने के लिये विद्यालय बंद नहीं करवाना चाहते हैं। रोज की दिनचर्या के साथ ही इन समस्याओं का समाधान करवा कर शिक्षा की स्थिति को मजबूत करना चाहते हैं। ग्राम सभा में पहली बार बच्चों ने उपस्थित होकर अपनी मांग रखी। लोगों ने बाल पंचायत की इस पहल को सराहा व बच्चों की माँग का समर्थन किया।

ग्राम सभा में सरपंच उदय कंवर, उपसरपंच शांतिलाल शर्मा, सचिव महावीर सिंह चौधरी, सहायक सचिव जगपाल सिंह राणावत, अध्यापक प्रेमचन्द्र सालवी व बाल पंचायत के शाहरूख खान मन्सूरी, नारायण लाल भाम्बी, कृष्णा भाम्बी, नारायणी भाम्बी, सावन भाम्बी व सचेतक आशा बोहरा सहित ग्रामीण जन उपस्थित थे।

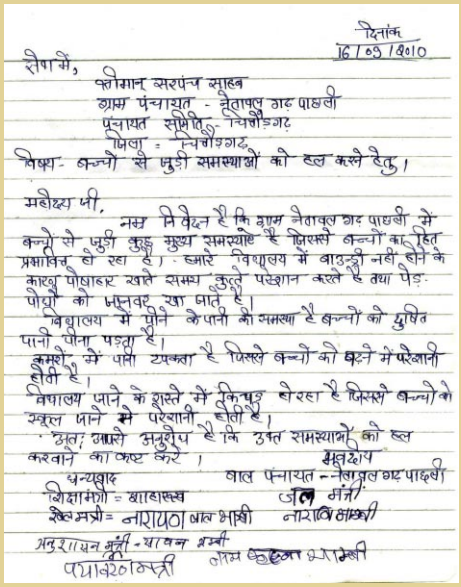

दिनांक 16/09/2010

सेवा में,
श्रीमान सरपंच साहब
ग्राम पंचायत - नेतावल गढ़ पाछली
पंचायत समिति - चित्तौड़गढ़
जिला = चित्तौड़गढ़

विषय- बच्चों से जुड़ी समस्याओं को हल करने हेतु।

महोदय जी,
नम्र निवेदन है कि ग्राम नेतावल गढ़ पाछली में बच्चों से जुड़ी कुछ मुख्य समस्याऐ है जिससे बच्चों का हित प्रभावित हो रहा है। हमारे विद्यालय में बाउन्ड्री नहीं होने के कारण पोषाहार खाते समय कुत्ते परेशान करते है तथा पेड़-पौधों को जानवर खा जाते है।
विद्यालय में पीने के पानी की समस्या है बच्चों को दुषित पानी पीना पड़ता है।
कमरों में पानी टपकता है जिससे बच्चों को पढ़ने में परेशानी होती है।
विद्यालय जाने के रास्ते में कीचड़ हो रहा है जिससे बच्चो को स्कूल जाने मे परेशानी होती है।
अत: आपसे अनुरोध है कि उक्त समस्याओं को हल करवाने का कष्ट करे।

धन्यवाद

भवदीय
बाल पंचायत - नेतावल गढ़ पाछली
शिक्षामंत्री = शाहरूख — जल मंत्री
खेलमंत्री = नारायण लाल भाम्बी — नारायणी भाम्बी
अनुशासन मंत्री - सावन भाम्बी
पर्यावरणमन्त्री — कृष्णा भाम्बी

समझदार भेड़िया

एक भेड़िया बहुत समझदार और होशियार था। एक बार की बात है जब वह जंगल से गुजर रहा था तो अचानक उसे एक मरा हुआ हाथी दिखाई दिया। भेड़िये ने अपने पंजों से उसकी चमड़ी उधेड़ने की कोशिश की परन्तु चमड़ी इतनी सख्त थी की उसे काटना व उधेड़ना उसकी शक्ति के बाहर था। अचानक एक बब्बर शेर वहाँ आ धमका। भेड़िया बोला, "महाराज! मेरे मालिक मैं तो बस आपके लिये ही इसकी रखवाली कर रहा था कि कब आप यहाँ आयें और मैं आपको यह भेंट दे सकूँ। कृपया आप इसे मेरी तरफ से स्वीकार करें।" बब्बर शेर बोला, ''तुम्हारा धन्यवाद परंतु तुम तो मेरा स्वभाव जानते ही हो मैं किसी के द्वारा किया गया शिकार स्वीकार नहीं करता हूँ। मैं अपनी खुशी से तुम्हारी यह भेंट तुम्हें वापस सौंपता हूँ।" और बब्बर शेर अपने रस्ते हो लिया।

अभी मुसीबत खत्म नहीं हुई थी। अब वहाँ एक साधारण शेर आया उसे देख भेड़िया झट बोला–"चाचाजी–चाचाजी आप यहाँ मौत के मुँह में कहाँ घूम रहे हैं।" शेर बोला–"क्या मतलब?" भेड़िये ने कहा–"चाचाजी इस हाथी को एक बब्बर शेर ने मारा है और मुझे इसकी रखवाली के लिये रख छोड़ा है। जाते जाते राजाजी मुझे यह हिदायत देकर गये हैं कि अगर कोई शेर हाथी के आस पास से भी गुजरे तो मुझे सूचित कर देना मैं सबका खात्मा कर दूंगा।" इतना सुनते ही शेर डर गया और गिड़गिड़ाने लगा, "भतीजे अगर मेरे बारे में तुम राजाजी को सूचित नहीं करोगे तो मैं बच जाउँगा, अच्छा तो मैं चलता हूँ" यह कहकर शेर रफूचक्कर हो गया।

उसके जाते ही एक चीता वहाँ आया। उसे देख भेड़िये ने मन ही मन सोचा कि इसके दाँत बड़े तीखे हैं यदि मैं इससे हाथी की खाल कटवा दूँ तो मुझे खाने में आसानी होगी। बस फिर क्या था भेड़िया चीते से बोला, "क्या बात है भानजे बड़े समय बाद नजर आये और बड़े कमजोर भी दिखाई दे रहे हो। देखो वह जो मरा हुआ हाथी है इसे बब्बर शेर ने मारा है और मुझे ध्यान रखने को कहा है, परन्तु यदि तुम इस हाथी का स्वादिष्ट गोश्त खाना चाहते हो तो जल्दी खा लो राजाजी के आते ही मैं तुम्हें सूचित कर दूंगा तुम झट से भाग जाना।'' चीते ने जैसे ही खाने के लिये मरे हुये हाथी को दाँत लगा कर चमड़ी उधेड़ी भेड़िया चिल्लाने लगा ''भान्जे भागो राजाजी आ रहे है।'' चीता यह सुनते ही बिना इधर उधर देखे नौ दो ग्यारह हो गया। इस तरह से भेड़िये ने लम्बे समय के लिये अपना भोजन तैयार कर लिया।

शिक्षा – "अकलमंदी से मुश्किल से मुश्किल काम भी आसानी से हल किया जा सकता है।"

हँसना मना है

अध्यापक – "इतनी मार खाने के बाद भी हँस रहे हो तुम्हे शर्म नही आती।"

चिन्टू – "गाँधीजी ने कहा था कि मुसीबत के समय हँसते रहना चाहिये।"

दादाजी – "राहुल जाओ जल्दी छुप जाओ तुम्हारी टीचर आ रही है।"

राहुल – "दादाजी पहले आप छुप जाओ क्योंकि आपकी मौत के बहाने ही तो मैने दो हफ्ते की छुट्टी ली है।"

शंकर दास वैष्णव

बूझो तो जानें

- ऊँट की बैठक हिरण की चाल वह कौन सा जानवर जिसके दुम न बाल।
- एक जानवर ऐसा जिसके दुम पर पैसा।
- हरी थी मन भरी थी लाल मोती जड़ी थी। राजाजी के खेत में दुशाला ओड़े खड़ी थी।

उत्तर : मेंढक, मोर, मक्का

ईद का तोहफा

आज सभी बहुत खुश हैं, बड़ों के साथ साथ बच्चे भी जल्दी उठ कर नमाज अदा करने के लिये तैयार हो रहे हैं। नजमा बी किचन में सेवईयाँ व व्यंजन तैयार कर रही है। आज घर पर दिनभर मेहमानों का मजमा लगने वाला है क्योंकि आज ईद है। चारों ओर खुशी की लहर दौड़ रही है लेकिन अब्दुल के चेहरे पर उदासी चाहकर भी नहीं छुप पा रही है। अब्दुल सलीम भाई के साथ गैराज पर काम करता है व छुट्टी के दिन घर के कामों में नजमा बी का हाथ बटाता है। आज उसकी आंखे नम थी क्योंकि दो साल पहले आज ही के दिन अब्दुल के अम्मी और अब्बू सड़क हादसे में अल्लाह को प्यारे हो गये थे। तभी से सलीम भाई ने अब्दुल को अपने घर रख लिया व गैराज का काम सिखा कर दुकान के काम में लगा दिया।

सलीम की इकलौती बेटी आयशा आज बहुत खुश है क्योंकि उसे आज ईदी मिलनी है। आज वह अपने अम्मी अब्बू से जो भी मांगेगी उसे मिलेगा। अपनी सहेलियों में सबसे अच्छी दिखने की चाह में आयशा सुबह से शीशे के सामने खड़ी होकर अपने को संवारने में लगी हुई है। नजमा बी ने रसोई के काम में हाथ बंटाने के लिए आयशा को कई बार आवाज़ें भी लगाई लेकिन आयशा माफी मांगते हुए घर के बाहर अपनी सहेलियों से मिलने चली गई। सलीम भाई के अपने दोस्तों के साथ आते ही अब्दुल उनके लिये शीर खोरमा व सेवईयाँ लाता है। दूसरे बच्चों को देख अब्दुल भी अपने वो दिन याद करने लगा जब वह स्कूल जाता था और अपने दोस्तों के साथ ईद वाले दिन खूब मौज मस्ती करता व सुबह से ही नए कपड़े पहन कर वह अपने अब्बू के साथ नमाज पढ़ने जाता। आज के दिन अपने अम्मी अब्बू व बड़ों से ईदी प्राप्त कर वह दोस्तों के साथ मेला देखने जाता था।

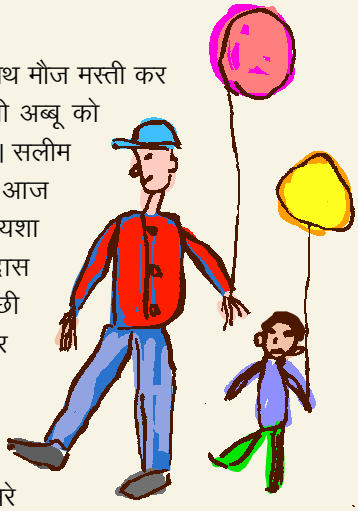

आयशा अपनी सहेलियों के साथ मौज मस्ती कर अपने घर आती है व अपने अम्मी अब्बू को गले लगकर ईद की बधाई देती है। सलीम भाई आयशा से पूछते हैं "आशु आज तुमको ईदी पर क्या चाहिए।" आयशा आज सुबह से ही अब्दुल को उदास देख रही थी उसे यह बात अच्छी नही लगी। आयशा अब्दुल की और देखते हुये बोली, "अब्बू मैं चाहती हूँ कि कल से अब्दुल भी मेरे साथ स्कूल पढ़ने जाये। अगर मेरा छोटा भाई होता तो वह मेरे साथ स्कूल पढ़ने जाता तो अब्दुल क्यों नहीं?" आयशा की बात सुनकर सलीम भाई बहुत खुश हुये क्योंकि अब्दुल उनका बेटे से भी ज्यादा ध्यान रखता था। सलीम व नज़मा दोनो ने आयशा की बातों के लिये हामी भरी और अगले दिन उसके दाखिले की बात कही।

दूसरे ही दिन सलीम ने आयशा के साथ स्कूल जाकर अब्दुल का दाखिला करवाया और माता पिता की जगह अपना नाम दिया। खुशी के मारे अब्दुल की आंखे भर आईं क्योंकि इससे अच्छी ईदी उसे आज से पहले कभी नही मिली थी। आज उसका पढ़ने का सपना साकार हुआ तथा साथ ही उसे पुनः अपने माँ बाप व बड़ी बहन मिल गये जिनके साथ वो खुश था।

वन्दना, कट्स

हर बच्चे के चेहरे पर लानी है मुस्कान

जब बच्चा स्कूल में लेने जाता एडमिशन,
कुछ लोग उसको मुफ्त में देते हैं टेंशन।

यह अपने जीवन में कभी नहीं सुधर पायेगा,
एक दिन स्कूल से भाग कर चला जाएगा।

कौन कहता है कि बच्चे नहीं चाहते हैं पढना,
उनको आता है हर मुसीबत से डटकर लड़ना।

ज्ञान के लिए प्रवेश और सेवा के लिए प्रस्थान,
गाँव के हर बच्चे को दिलवाना है यह वरदान।

बच्चे होते हैं मन के सच्चे यह सबको बतलाना है,
इन गुदड़ी के लाल को अधिकार हमें दिलवाना है।

हर बच्चे के चेहरे पर लानी है मुस्कान,
तभी तो बन पायेगा प्यारो राजस्थान।

सुमित्रा गर्ग

अबे थाई बाताओ मुँ कई करूँ।

घर सूं निकल्यो तो धोती फाटगी, स्टेशन पे ग्यो तो रेल परीगी,
घरे अरवाणो पाछो आयो तो घर वाली मोटो तालो देन परीगी,
अबे थांई बाताओ मुँ कई करूँ।

हांज पड्या घर वाली बोली घर में लूण, मिरचा कोनी,
हल्दी रो डाबो खाली और जीरा रो एक दाणो कोनी,
अबे थाई बताओ मुँ कई करूँ।

खाणो खाबा बैठयो तो रोटी कोनी, पिवाने राब कोनी,
बजार सूँ आटो लाउं पण नके फूटी कोड़ी कोनी,
अबे थाई बतओ मुँ कई करूँ।

टाबरां री लेण रे आगे, घर वाळी रिस्याणी पीहर भागे
टाबरां ने भणाउं तो मारसाब विकास रा नाम पे पइस्या मांगे
अबे थाई बताओं मुँ कई करूँ।

नारायण लाल भाम्बी , खेल मंत्री कक्षा 7वी
बाल पंचायत नेतावल गढ़ पाछली

झलकियां

प्रवेशोत्सव के दौरान बच्चों को वितरित सामग्री

सचेतक बैठक

सरपंच को प्रार्थना–पत्र लिखते बाल पंचायत के बच्चे

बालसभा का आयोजन

विद्यालय में आयोजित बाल सम्मेलन

एराल में आयोजित ग्राम सभा

अपाहिज

वो मानव
जिसका कोई
अंग भंग हो,
आम भाषा में
अपाहिज
कहलाता है।
पर मुझे नहीं
लगता कि,
भंगित अंग
का होना
अपाहिज होता
है।

मैने देखे हैं ऐसे इंसान,
जिनके नेत्र नहीं और वो सूंघ कर काम चलाते हैं।
जिनके हाथ नहीं वो पैरों को हाथ बनाते हैं।
जिनके पैर नहीं वो हाथों से चल कर जाते हैं।

जिनके हाथ पांव नहीं वो धड़ को इस्तेमाल में लाते हैं।
मैंने पैर की उंगली में फंसे ब्रश से चित्रकारी करते देखा है,
एक हाथ से सलाईयों पर स्वेटर बुनते देखा है,
फिर कैसे मान लें कि ऐसे लोग अपाहिज होते हैं?

अपाहिज तो हैं वो लोग जो केवल
सोच की बैसाखी लेकर चलते हैं,
और अपनी अकर्मण्यता को
अपनी मजबूरी बताते हैं।

संकलित
साभार
संगीत स्वरूप (गीत)

मीडिया क्लिप

सावा की ढाणी में बच्चों ने रास्ता बनाया सुगम

चित्तौड़गढ़। ग्राम पंचायत सामरी के सावा की ढाणी में बच्चों ने संगठन शक्ति व जागरूकता का अनूठा उदाहरण पेश किया। यहां आम रास्ते में भरने वाले बरसात के पानी से परेशान बच्चों ने श्रमदान कर रास्ता

ग्राम सभा में बच्चों ने रखी समस्याएं

चित्तौड़गढ़. नेतावलगढ़ पाछली की ग्रामसभा में विद्यालय के बच्चे समस्याओं का प्रार्थना पत्र लेकर पहुंचे और सरपंच, सचिव व सदस्यों के समक्ष पत्र पेश कर समस्याओं के निराकरण की मांग की। नेतावलगढ़ पाछली की ग्रामसभा में सामाजिक अंकेक्षण कार्य

बच्चों का स्वागत

पत्रिका संवाददाता @ चित्तौड़गढ़

पाटनिया में स्वयं सेवी संगठन कट्स ने प्रवेशोत्सव मनाया। सेव द चिल्ड्रन के सहयोग से कार्यक्रम पंचायतों के 28 गांवों में चल रहा है। प्रारंभ में नवप्रवेशी ब माल्यार्पण कर शैक्षिक सामग्री की गई।

शिक्षा धन सदैव बढ़ता है

चित्तौड़गढ़। ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष त्रिलोकचंद जमा रुपए-पैसे तो कभी भी लेकिन शिक्षा ऐसा धन है, हीं होता। यह विचार उन्होंने थत स्कूल में प्रवेशोत्सव इंटरनेशनल द्वारा सेव द से चलाया जा रहा पूर्व यान के तहत आयोजित ख्य अतिथि के रूप में में नवप्रवेशी बच्चों का लगाकर स्वागत किया चायत समिति सदस्य

बच्चों के चहुंमुखी विकास के लिए शिक्षा आवश्यक

पाटनिया में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम आयोजित

चित्तौड़गढ़, 7 जुलाई। पैसा तो वह पूंजी है, जो कभी न कभी खत्म हो ही जाती है, परन्तु शिक्षा वह धन है जो सदैव बढ़ता ही है। शिक्षा वह आवश्यक पहलू है, जो बच्चों के चहुंमुखी विकास के लिए आवश्यक है। कट्स संस्था द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं। यह विचार ग्रामीण ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष त्रिलोकचन्द जाट ने पाटनिया ग्राम के विद्यालय में आयोजित प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में व्यक्त किए।

बच्चों ने श्रमदान कर पेश की अनूठी मिसाल

न्यूज सर्विस

चित्तौड़गढ़, 8 सितम्बर। रास्ता खराब होने से बहुत परेशानी हो रही थी। पानी सड़क से घरों में घुस जाता था। आज बच्चों द्वारा श्रमदान के इस प्रयास से हमें भी प्रेरणा मिली है। यह विचार बुधवार को ग्राम पंचायत सामरी के गांव ढाणी में बच्चों द्वारा किए गए एक छोटे से प्रयास के कारण उभर कर आए। सावा की ढाणी की बाल पंचायत के बच्चों ने संगठन की शक्ति व जागरूकता का अनूठा

सभी बच्चों द्वारा लाई गई मिट्टी डालकर रास्ते को आवागमन के अनुरूप कर दिया। ग्राम पंचायत से मिलने वाले सहयोग के अलावा यह गांव के बच्चों द्वारा पहला कदम है। सभी ग्रामवासियों को बच्चों के इस प्रयास से अस्थाई रूप से राहत अवश्य मिली है। बाल पंचायत की पप्पुकुमारी रायका ने बताया कि बरसात के दिनों में गांव के रास्ते में घुटनों तक पानी भर जाता है व कई दिनों तक कीचड़ रहता है, जिससे आने-जाने वालों को बहुत परेशानी उठानी पड़ती है, इस कारण बाल पंचायत के सदस्यों ने गांव में व्यर्थ

कट्स मानव विकास केन्द्र
सेंती (रावला), चित्तौड़गढ़, फोन : (01472) 241472, फैक्स : 240072
E-mail: chd@cuts.org, Website: www.cuts-international.org

SAVE THE CHILDREN, INDIA
Rajasthan State Programme Office
42, Vrindavan Vihar, Kings Road, Jaipur - 302 021
Ph: +91 141 403 5881, Fx: +91 141 322 0881 www.savethechildren.in